CBSE कक्षा 11 हिंदी (ऐच्छिक)
अंतरा गद्य-खण्ड
पाठ-7 नए की जन्म कुंडली : एक
पुनरावृत्ति नोट्स

विधा- विचार प्रधान निबंध "एक साहित्यिक की डायरी" एक का अंश
निबन्धकार- गजानन माधव मुक्तिबोध

लेखक की रचनायें-

- 'चाँद का मुँह टेढ़ा है', 'भूरि-भूरि खाक धूल'।
- **आलोचनात्मक कृतियाँ-** 'नये साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र', 'कमायनी : एक पुनर्विचार', 'एक साहित्यिक की डायरी'। मुक्तिबोध रचनावली में उनकी सम्पूर्ण रंचनाएं संकलित हैं।
- **पत्र-पत्रिका सम्पादन-** 'नया खून' (साप्ताहिक)।

भाषा-शैली-

- विचारात्मक शैली, चित्रात्मक शैली, नाटकीय शैली, तत्समप्रधान शब्दावली, तर्कशीलता।

पाठ-परिचय-

- नए की जन्म कुंडली-एक- एक विचार प्रधान निबंध है। इस निबंध में लेखक ने व्यक्ति और समाज को बाहरी तथा आंतरिक परिवर्तनो को परिणाम स्वरूप प्राप्त चेतना को 'नए' के सन्दर्भ में देखने की कोशिश की है। लेखक का मानना है कि सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक और साहित्यिक परिवर्तन को फलस्वरूप प्राप्त यथार्थ की वैज्ञानिक चेतना को ही नया मानना चाहिए। लेखक के अनुसार 'संघर्ष एवं विरोध' के निष्कर्ष को व्यावहारिकता में न जीने के कारण ही हम पुराने को तो छोड़ देते हैं। किन्तु "नए" को वास्तविक रूप में अपना ही नहीं पाते है।

स्मरणीय बिन्दु-

- लेखक अपने मित्र को अत्यन्त बुद्धिमान समझता हैं। मित्र की तार्किक विश्लेषण क्षमता अद्भुत हैं। उसकी बुद्धि परीक्षण क्षमता में प्रखरता थी, इसलिए लेखक अपने मित्र की प्रतिभा से प्रभावित था। लेखक अपने मित्र के आन्तरिक सौन्दर्य के साथ ही साथ बाह्य सौन्दर्य से भी अभिभूत था। उसके अनुसार सौन्दर्य व्यक्ति के व्यक्तित्व में चार चाँद लगा देता है।
- उसके माथे की लकीरों के सौंदर्य की समता मर्मवचन लिखे हुए कागज़ से करता है। वह कहता है कि व्यक्ति के व्यक्तित्व में सौंदर्य का महत्त्व तो हैं, पर उसमें रहस्य भी बना रहना चाहिए तभी वह प्रभावशाली बनता है।
- बारह वर्षों बाद लेखक की उससे मुलाकात होती है, तब भी वह उसके आकर्षण में कोई कमी नहीं पाता। लेकिन लेखक को अपने और अपने मित्र के व्यवहार और रुचियों में अंतर दिखाई देता है जैसे-उसका मित्र शैले को 'ओड टु वैस्ट विंड'

अर्थात् काव्य और वह 'स्क्वेयर रूट और मानस वन' अर्थात् गणित नहीं समझ पाता। लेखक भावुक है और उसका मित्र तर्कशील एवं बुद्धिवादी। लेखक का मित्र उसके भावनात्मक स्तर तक और लेखक अपने मित्र के बौद्धिक स्तर पर नहीं पहुँच पाता उसके मित्र जिद्दी भी है, वह राजनीति अपना लेता है और साहित्यक रचनाएँ भी करता है। लेखक को चित्रकला, नृत्यकला और मानव-वंश शास्त्र की जानकारी है। आदतों और व्यवहार के अंतर को लेखक दो ध्रुवों का भेद मानने लगा। लेखक अपने मित्र के विषय में बताता है कि वह कविता लिखते समय अपने को प्रकट करता है तथा सभी इंद्रियों से काम लेते हुए एक आंतरिक यात्रा करता है, इसलिए लेखक कविता को भारतीय परंपरा का विचित्र परिणाम कहता है।

- सांसारिक समझौते न करने की आदत ने मित्र के व्यक्तित्व को असामान्य बना दिया। लेखक उसे सामान्य मानता है जो भीतर के असामान्य के उग्र आदेशों को न मानने का सामर्थ्य रखता हो। उसका मित्र जब भी उसके भीतर के असामान्य को उकसा देता था तब वह उसके सामने स्वयं को हीन समझने लगता था। लेखक की सोचने, समझने और कार्य करने की अपनी शैली थी। वह अपने कार्यों से लोगों को प्रसन्न रखता था, अपनी सहजता से सफल और प्रसिद्ध हुआ एवं भद्र कहलाया। वह उसकी व्यावहरिक बुद्धि का परिणाम था। उसका मित्र किसी भी कार्य को इसलिए करता था, क्योंकि वह हर क्षेत्र में व्यवस्था चाहता था। इसके लिए वह अपना सब कुछ कुर्बान कर सकता था। वह समझौतावादी नहीं था। कर्तव्यपालन के प्रति उसमें क्रूरता दया निर्दयता थी। इसलिए वह असफल, नामहीन और आकारहीन रह गया।
- लेखक को लगता है कि उसका मित्र एक उल्का-पिंड की तरह है जो सूर्य के पास चक्कर लगाते हुए ब्रह्मांड में भटक गया है। उसका मित्र अपनी जिंदगी को भूल का एक नक्शा कहता है। वह छोटी-छोटी सफलताएँ चाहता था, पर उसे एक भव्य असफलता मिली। वह राजनीति में टिक नहीं पाया, क्योंकि वह आजीवन सिद्धांतों पर चलता रहा और स्वयं को बदलते सामाजिक मूल्यों के अनुरूप नहीं ढाल सका।
- एक बार चाँदनी रात में पेड़ के नीचे लेखक चुपचाप उससे बातें कर रहा था। लेखक ने पूछा कि पिछले बीस वर्षों की सबसे महत्त्वपूर्ण घटना क्या है तो उसने कहा-संयुक्त परिवारों का विघटन। परिवार का अर्थ अब पति, पत्नी और दो बच्चे हो गये है। अमीर बनने की होड़ में सभी संबंध गौण हो गए हैं तथा पैसा प्रधान हो गया है। सब ओर भौतिकता का प्रसार हो गया है। लेखक को उसका कथन सही लगा कि जिंदगी और ज़माना बदलते जा रहे हैं। लेखक ने पूछा-'इन वर्षों में सबसे बड़ी भूल कौन-सी हुई है?' उसने उत्तर दिया-राजनीति और साहित्य के पास समाज-सुधार का कोई कार्यक्रम न होना। राजनीति को जन-कल्याण से ही कुछ भी लेना-देना नहीं है। राजनीति में लोग स्वार्थ-सिद्धि के लिए आते हैं। इसलिए स्वतंत्रता के बाद गरीबी, अशिक्षा, भुखमरी समाप्त नहीं हुई है। आजादी के बाद जातिवाद का उदय इसी का दुष्परिणाम है। सर्वत्र अवसरवादी दृष्टिकोण अपनाया जा रहा है। कोई नया नहीं खोजना चाहता। पुराना लौट कर नहीं आ सका और नया पुराने का स्थान नहीं ले सका। समाज में प्रत्येक व्यक्ति अच्छाई त्याग कर बुराई की और अग्रसर हो रहा है। कथनी और करनी में अंतर आ गया है। घर के बाहर अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने, संघर्ष करने की बातें की जाती हैं परन्तु अपने पराये का भेद सामने आने पर सब चुप हो जाते हैं।
- धर्म भावना चली गई किन्तु वैज्ञानिक बुद्धि नहीं आई। नए मानक और मूल्य, परिभाषाहीन तथा आकारहीन हो गए। वे धर्म और दर्शन का स्थान नहीं ले सके।